KAPITEL XI.

Str. 3. a. पश्चिमस्याम ist wohl eine archaistische Form, da die Indischen Grammatiker dieses Adjectiv nicht unter den Wörtern, die der Pronominal-Declination folgen (सर्वाह), aufführen.

Str. 6. Gorr. तस्य वै यतमानस्य नरमेधेन भूपतेः। प्रोतितं मुल्लवयूपात्पश्मिन्द्रो तकार तं ॥ नां लताणसंपूर्ण प्रयते विनियोजितं। तस्मिन्द्ते पशौ विप्रो राजानमिर्मब्रवीत् ॥

Str. 8. Gorr. प्रायश्चितं मरुद्धोतत्तं वं प्रथम्पानय । म्रन्यं वाय्यानय क्रीवा यावत्कर्म प्रवर्तिते ॥

Str. 14, a. Gorr. न लेभे यज्ञियं प्रमं । Vgl. zu IV. 18. b. — V. 23. b. und VI. 16. b.

Str. 14. b. इतस् « von diesen (Söhnen) ».

Str. 18. Bei Gorresio wird auch im ersten Verse mit dem Genitiv construirt. — क्रनायसम् hier und 20. a. ist eine archaistische Form für कनायासन्, Gorr. hat an beiden Stellen eine andere Lesart.

KAPITEL XII.

Str. 1. b. und 2. a. Gorr. व्यग्रमत् und विश्रमतस्

Str. 6. Gorr. राजा च कृतकार्यः स्याङ्जीवेयं चाप्यक्ं यथा । भवता वीर्यमाश्रित्य तथा तं कर्तुमर्रुसि ॥

Vgl. zu Str. 12.

ŀ

Str. 7. a. Gorr. नायोः मे तमनायस्य ।

Str. 10. b. Gorr. तस्य जीवितदानेन: प्रियं मे कर्तमर्रुष ।

Str. 12. Gorr. शर्षां मामन्प्रातम्चीकस्य मृने: स्तं। (abhängig vom vorhergehenden मान्तयधम्) स्याद्विद्यं यथा, तस्य राज्ञवेः क्लियतां, तथा ॥